IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

रीवा संभाग में भौगोलिक एवं पठारी भागों में प्रवाहित होने वाली नदियों का जल प्रबन्धन : एक अध्ययन

हेमन्त कुमार उदय[1] and डॉ. ध्रुव कुमार द्विवेदी[2]

शोधार्थी (भूगोल), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]

प्राचार्य, सरस्वती विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[2]

शोध सारांशः रीवा पठार भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में रीवा जिले के एक हिस्से को कवर करता है। इस पठार के दक्षिण में कैमूर पहाड़ियाँ और उत्तर में विंध्य पर्वत श्रृंखला (या बिंज पहाड़) स्थित हैं। बिंज पहाड़ के उत्तर में जलोढ़ मैदान हैं जिन्हें उपरीहार कहा जाता है। पठार में रीवा जिले की हुजूर, सिरमौर और मऊगंज तहसीलें शामिल हैं। दक्षिण से उत्तर की ओर जाने पर ऊंचाई घट जाती है। कैमूर पहाड़ियाँ 450 मीटर (1,480 फीट) से अधिक ऊँचाई वाली हैं। तोंथर के जलोढ़ मैदान लगभग 100 मीटर (330 फीट) आसपास हैं।[1], पठारों की एक श्रृंखला कैमूर पहाड़ियों के साथ चलती है। इन नदी वाले पठारों में, उतरते पठारों की एक श्रृंखला शामिल है, जो पश्चिम में पन्ना पठार से शुरू होती है, इसके बाद भांडेर पठार और रीवा पठार और पूर्व में रोहतास पठार के साथ समाप्त होती है।[2] जल का जीवन से गहरा संबंध है और इस संबंध को कायम रखने के लिए जल संरक्षण ही एकमात्र विकल्प है। जल संरक्षण से न केवल विशाल आबादी वाले हमारे देश की जनता के लिए भविष्य की मांग को परा किया जा सकेगा, बल्कि जल के कारण उत्पन्न खतरों और जलजनित बीमारियों के दुष्प्रभाव से भी बजाया जा सकता है। इसके अलावा, जल संरक्षण से हरियाली और वन क्षेत्र को भी बढ़ाया जा सकता है, जो भविष्य के पर्यावरणीय संतुलन के लिए भी आवश्यक है। जल संरक्षण से आशय जल का उचित उपयोग तरे हुए मानव व्यवहार में परिवर्तन के साथ जल दक्षता को बढ़ाना और विभन्नि कार्यों के लिए गंदे जल का पुनः प्रयोग करने से है। उपरोक्त बिन्दुओं को शोध–पत्र में उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः रीवा, संभाग, भौगोलिक, पठारी, प्रवाहित, नदियों, अध्ययन, जल प्रबंधन आदि।

संदर्भ स्रोतः

[1]. "Rewa district"- Geography- Rewa district administration- ewy ls 21 जून 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010–07–11.

[2]. Bharatdwaj, K- - "Physical Geography: Introduction To Earth"- p- 158- google books- मूल से 6 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010–06–28.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

[3]. Sharma, Shri Kamal- "Spatial framework and economic development"- Google books- अभिगमन तिथि 2010–07–11.

[4]. Sharma, Shri Kamal- "Spatial framework and economic development: a geographical perspective"- Google books- अभिगमन तिथि 2010–07–11.

[5]. Bharatdwaj, K- "Physical Geography: Hydrosphere"-p- 154- Google books- मूल से 6 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010–07–11.

[6]. अग्निहोत्री, रामप्यारे (1950) : रीवा राज्य का इतिहास, साहित्य भवन, भोपाल, पृ. 16

[7]. डॉ. खन्ना, सी.एल. (2007) : भारत का भूगोल, शिवलाल प्रकाशन, इन्दौर, पृ. 16,17

[8]. डॉ. गौतम, अल्का (2015) : कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 90,91,

[9]. डॉ. चान्दना, आर.सी. (2014) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पृ. क्र. 47,140,141,367

[10]. डॉ. बंसल, सुरेश चन्द्र (2014) : भारत का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ 754–755

[11]. डॉ. मौर्य, एस.डी. (2015) आर्थिक भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेषन्स, इलाहाबाद,पृ. 189–190

[12]. डॉ. मौर्य, एस.डी. (2016) सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,पृ. 206,423

[13]. डॉ. मामोरिया, चतुर्भुज एवं डॉ. गुप्ता, के.एल. (2020), भारत का वृहद भूगोल, साहित्य

[14]. भवन, आगरा (उ.प्र.), पृ. क्र. 82,83,159,135,669

[15]. जिला जनगणना पुस्तिका, रीवा संभाग वर्ष 1999–2000, 2009–2010, 2019–2020

[16]. रीवा गजेटियर 1992

[17]. कुरुक्षेत्र जुलाई 2022, (विशेषांक) ग्रामीण विकास को समर्पित

[18]. प्रोफेसर रवीन्द्र नाथ तिवारी, डॉ. ब्रह्ममान्नद शर्मा, आदित्य सिंह बघेल, आशीष कुमार मिश्रा, (2022) मध्य प्रदेश की नदियाँ एक विश्लेषण, नित्या पब्लिकेशन, भोपाल पृ. 15–16 एवं 25–26